# हर्षितमुखता

बच्चे फूल जैसे होते है उनका स्वभाव कोमल होता है। पुष्पों की भाँति उनका चेहरा खिला हुआ होता है। हम भी फूलों की भाँति हर्षित बच्चों की तरह कोमल बनना चाहिए ताकि हम जीवन में अधिक सहनशील रह सके। बबूल या खजूर के पेड़ों में लचक नहीं होती है। इसलिए बड़ी-बड़ी आंधियों में आसानी से टूट कर गिर पड़ते हैं। जब कि छोटे पौधे आँधियां चलने पर भी टूटते नहीं है। कोमल होने के कारण नीचे झुक जाते है। जीवन की आँधी में सहनशील बन अपनी रक्षा कर लेते है हर परिस्थिति में केवल मुस्कुराते रहने का गुण सीख लें तो सबसे ज्यादा सहनशील माने जायेंगे।

पेड़ पौधे कोमल प्रकृति के होते हैं। उनमें मधुर फल होते है, सहनशील व्यक्ति भी मधुर स्वभाव लिये होता है। उसके प्रति कार्य व्यवहार में मधुरता होती है। मधुरता अपनाने वाले व्यक्ति सच्चे और उत्साही होते हैं परिस्थतियों का मुकाबला करते हर हाल में खुश रहते हैं। जैसे इतर की सुगन्ध स्वत: ही फैल जाती है तथा दूसरों को खुशी देती है। वैसे हर्षित चेहरे को देखकर दूसरों को कुछ समय के लिए खुशी मिल जाती है। अन्य गुणों को धारण करने के लिए कुछ ज्ञान सुनाना पड़ता है परन्तु हर्षितमुखता चेहरे पर स्वत: तुरन्त चली आती है।

जो व्यक्ति बात-बात में अपने चेहरे पर नाराजगी लिख देता है। हर छोटी-मोटी परिस्थितियों में उलझन के चिन्ह चेहरे पर प्रकट करता है वह लोक पसन्द नहीं होता। हर्षितमुख बनने के लिए हंस पक्षी वाला मुख होना चाहिए।

जैसे हंस मोती चुगता है, खीर ले लेता है और नीर छोड़ देता है वैसे मनुष्य को चाहिए गुण रूप मोती चुंगे अवगुण रूपी कंकड़ को छोड़ दें।

- ब्रह्माकुमारीज् वार्ता फिचर्स
www.bkvarta.com